Shodhaamrit, Vol.-3; Issue-3 (July-September) 2026 : Page No.-131-134

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अंतर्राष्ट्रीय सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-5.375
Vol.-3; issue-3 (July-Sept.) 2026
Page No- 131-134
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com
Author's :

1. अंशु कुमारी
शोधार्थी–विश्वविद्यालय मैथिली विभाग,
भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा.

2. प्रो0 (डॉ.) देव नारायण साह
शोध–निर्देशक – सेवानिवृत पूर्व विभागाध्यक्ष,
विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, मधेपुरा.

Corresponding Author :

अंशु कुमारी
शोधार्थी–विश्वविद्यालय मैथिली विभाग,
भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा.

सुभाष चन्द्र यादवक 'बनैत बिगड़ैत'मे चित्रित समाज : एकटा समाजशास्त्रीय अध्ययन

सारांश : सुभाष चन्द्र यादवक कथा-संग्रह 'बनैत बिगड़ैत' समकालीन मैथिली कथा-साहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण संग्रह अछि, जाहिमे मिथिलाक समाज बहुआयामी रूपमे चित्रित भेल अछि। प्रस्तुत आलेखक उद्देश्य एहि कथा-संग्रहमे निहित सामाजिक यथार्थक अध्ययन करब अछि। अध्ययनक आधार मुख्यतः संग्रहक मूल पाठ अछि आ विश्लेषणात्मक पद्धतिक प्रयोग कयल गेल अछि। संग्रहक कथासभमे ग्रामीण जीवन, पारिवारिक सम्बन्ध, आर्थिक विषमता, बेरोजगारी, प्रवास, जातिगत संरचना, स्त्रीक स्थिति, सामाजिक असुरक्षा, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, कोसीक बाढ़ि आ विस्थापन सन सामाजिक प्रश्न उभरि कऽ अबैत अछि। 'अपन-अपन दुःख'मे परिवारक भीतर व्यक्तिक पृथक पीड़ा, 'ओ लड़की'मे सामाजिक स्थिति आ आत्मसम्मानक द्वन्द्व, 'किनियाँ-पुतरा'मे स्त्री-बालिकाक असुरक्षा, 'परलय'मे बाढ़ि-पीड़ित जीवन, 'बनैत बिगड़ैत'मे प्रवासजन्य पारिवारिक विघटन आ 'हमर गाम'मे ग्रामीण समाजक परिवर्तनशील स्वरूप विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि। कथाकार समाजकेँ स्थिर संरचनाक रूपमे नहि, अपितु निरन्तर परिवर्तनशील प्रक्रिया रूपमे देखैत छथि। एहि संग्रहक सामाजिक चेतनाक केन्द्रमे सामान्य मनुष्यक संघर्ष आ ओकर मानवीय गरिमा अछि। एहिलेल 'बनैत बिगड़ैत' मिथिलाक समकालीन समाजक अन्तर्विरोध, विघटन, परिवर्तन आ मानवीय संघर्षक महत्त्वपूर्ण कथात्मक दस्तावेज सिद्ध होइत अछि।

मुख्य शब्द : मैथिली कथा, सामाजिक यथार्थ, ग्रामीण समाज, प्रवास, कोसी, सामाजिक परिवर्तन।

प्रस्तावना : साहित्य मूलतः समाजक अनुभव-जगतसँ निर्मित होइत अछि। कथा-साहित्य विशेष रूपसँ ओहि जीवन-स्थितिसभकेँ अभिव्यक्ति दैत अछि, जतय मनुष्य अपन परिवेश, सम्बन्ध, आर्थिक अवस्था आ सामाजिक संरचनाक संग निरन्तर संघर्ष करैत अछि।

सुभाष चन्द्र यादवक 'बनैत बिगड़ैत' कथा-संग्रहक सामाजिक संसार एहि दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि जे एतय जीवनक कोनो एकरूप चित्र नहि अछि। लेखकक अपन कथनमे रचना समाज आ समयक परिवर्तनशील यथार्थसँ सम्बद्ध अछि आ सामाजिक-ऐतिहासिक दशा

कथाक निर्माणकेँ प्रभावित करैत अछि।

संग्रहमे कुल 21 गोट कथा सम्मिलित छथि, जिनकर विषय-परिसर व्यक्तिगत जीवनसँ लऽ कऽ व्यापक सामाजिक यथार्थ धरि पसरल अछि। अपन-अपन दुःख, असुरक्षित, आतंक, ओ लड़की, किनियाँ-पुतरा, दाना, दृष्टि, परलय, बनैत बिगड़ैत, रंभा आ हमर गाम सन कथासभ सामाजिक विश्लेषणक दृष्टिसँ विशेष महत्त्व रखैत छथि।

अध्ययनक उद्देश्य आ पद्धति : एहि आलेखक प्रमुख उद्देश्य 'बनैत बिगड़ैत'मे चित्रित समाजक मुख्य विशेषतासभक अध्ययन करब अछि। विशेष रूपसँ ग्रामीण आ पारिवारिक जीवन, आर्थिक संघर्ष, जाति-वर्ग, प्रवास, प्राकृतिक आपदा, स्त्रीक स्थिति आ सामाजिक परिवर्तनक विश्लेषण कयल गेल अछि। अध्ययनक मुख्य स्रोत 'बनैत बिगड़ैत'क मूल पाठ अछि। पाठ-विश्लेषणात्मक आ समाजशास्त्रीय व्याख्या-पद्धतिक माध्यमसँ कथासभमे निहित सामाजिक यथार्थक अध्ययन कयल गेल अछि।

ग्रामीण समाज आ परिवर्तनशील परिवेश : सुभाष चन्द्र यादवक कथा-संसारक एकटा पैघ भाग ग्रामीण परिवेशसँ सम्बद्ध अछि। मुदा हुनकर गाम मात्र प्रकृतिक सौन्दर्य वा लोकसंस्कृतिक रोमानी चित्र नहि अछि। गामक भीतर आर्थिक संघर्ष, आपसी विवाद, सामाजिक विषमता आ बदलैत जीवन-स्थितिसभ सेहो उपस्थित छथि। संग्रहक आलोचनात्मक भूमिका गाम, घर, परम्परा, परिवेश, खेत-खरिहान, आपसी कलह, समन्वय आ कोसीक कहरकेँ लेखकक कथा-अनुभवक महत्त्वपूर्ण पक्ष मानैत अछि। डॉ मेघन प्रसाद हिनक अपन कथा–कोशमे हिनक कथाकेँ चर्चित आ बहुतचर्चितक संज्ञा देने अछि।[1]

'हमर गाम'[2] क माध्यमसँ एहन ग्रामीण समाज सामने अबैत अछि, जे कोसीक भौगोलिक अस्थिरतासँ प्रभावित अछि। नदीक कटाव मात्र जमीन वा घर नष्ट नहि करैत अछि, अपितु लोकसभक सामाजिक जीवनकेँ सेहो अस्थिर बना दैत अछि। टोला उजड़ैत अछि, परिवार विभिन्न स्थानपर छिड़िया जाइत अछि आ जीविकाक लेल लोककेँ गाम छोड़बाक बाध्यता उत्पन्न होइत अछि। एहि प्रकारेँ प्राकृतिक संकट सामाजिक संकटमे परिणत भऽ जाइत अछि।

परिवार, व्यक्तित्व आ अपन-अपन दुःख : 'अपन-अपन दुःख'[3] क सामाजिक महत्त्व परिवारक भीतर व्यक्तिक अलग-अलग अनुभूतिक संसारकेँ उद्घाटित करबमे अछि। परिवार बाह्य रूपमे एकटा संयुक्त इकाई देखाइत अछि, मुदा प्रत्येक सदस्यक अपन पीड़ा, अपेक्षा आ अभाव होइत छैक। एतय कथाकार परिवारक आदर्श रूपक चित्रण नहि करैत छथि, अपितु ओकर भीतर उत्पन्न उपेक्षा आ संवेदनात्मक दूरीकेँ देखबैत छथि।

एहि कथा-संसारमे मनुष्य निकट रहितो एक-दोसराक वास्तविक पीड़ासँ अपरिचित रहि सकैत अछि। एहन स्थिति आधुनिक पारिवारिक समाजक एकटा महत्त्वपूर्ण यथार्थ अछि। एहिलेल परिवार सुभाष चन्द्र यादवक कथामे मात्र सामाजिक संस्था नहि रहि मनुष्यक संवेदना आ असंवेदनाक परीक्षा-स्थल सेहो अछि।

प्रवास आ पारिवारिक विघटन : शीर्षक कथा 'बनैत बिगड़ैत'[4] मे प्रवासक कारण परिवारक बदलैत स्वरूप सोझा अबैत अछि। जीविकाक खोजमे परिवारक युवक गामसँ बाहर जाइत छथि आ एहि प्रक्रियाक परिणाम मात्र आर्थिक नहि होइत अछि। वृद्ध माता-पिता आ घरपर रहि गेल सदस्य मानसिक रूपसँ एकाकी भऽ जाइत छथि। लेखक लिखैत छथि जे, जे माला पहिने कहैत छलीह जे मोटरी नीक बच्चा नहि नीक, सैह माला अखैन संतान खातिर कतेक चिंतित छै।[5]

एहि कथामे सम्बन्धक एकटा गम्भीर विडम्बना उभरैत अछि। एक संग रहैत समय परिवारमे तनाव आ असन्तोष रहि सकैत अछि, मुदा दूरी उत्पन्न भेलापर उपस्थितिक वास्तविक महत्त्व बुझाइत अछि। प्रवास एहि प्रकारेँ परिवारक भावनात्मक संरचनाकेँ बदलि दैत अछि।

संग्रहमे प्रवास आधुनिक ग्रामीण जीवनक आर्थिक विवशताक परिणाम रूपमे उपस्थित अछि। गाम छोड़ब कोनो गोटेकेँ पसिन्न नहि मुदा रोजी-रोटीक अभावसँ उत्पन्न सामाजिक बाध्यता लेल जाइये पड़ैत छैक। एहि दृष्टिसँ 'बनैत बिगड़ैत' ग्रामीण समाजक बदलैत आर्थिक संरचनाक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज अछि।

जाति, वर्ग आ आत्मसम्मानक प्रश्न : सुभाष चन्द्र यादवक कथासभमे जाति आ वर्गक प्रश्न जीवनक व्यावहारिक अनुभवसँ जुड़ल रूपमे उपस्थित अछि। 'ओ लड़की'[6] मे नवीनक अनुभव विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि। दोसरक प्रयुक्त कप ग्रहण करबाक प्रसंगमे ओकर भीतर अपमान, क्रोध आ आत्मसम्मानक तीव्र द्वन्द्व उत्पन्न होइत अछि। की ओ ओहि दुनूक अँइठ कप लऽ जाएत?[7]

एहि प्रसंगक सामाजिक महत्त्व एहि बातमे अछि जे सामाजिक रूपसँ कमजोर व्यक्तिक भीतर सेहो आत्मसम्मानक प्रबल चेतना होइत छैक। मुदा सामाजिक स्थिति, आर्थिक निर्भरता वा स्थापित मानसिकता ओकर प्रतिरोधकेँ पूर्ण रूपसँ अभिव्यक्त नहि होमऽ दैत अछि। एहि प्रकारेँ कथाकार सामाजिक हीनताबोधक मनोविज्ञानकेँ कथा-स्थितिक माध्यमसँ उद्घाटित करैत छथि।

जातिगत संरचनाक प्रश्न 'हमर गाम'[8] क सामाजिक संसारमे सेहो उपस्थित अछि। मुदा प्राकृतिक संकटक बीच पारम्परिक सामाजिक दूरी कमजोर पड़ैत देखाइत छथि। एतय परिवर्तनक सम्भावना अछि, मुदा समाज पुरान संस्कारसँ पूर्णतः मुक्त भऽ गेल अछि एहन दावा कथा नहि करैत अछि। ई परिवर्तनशील समाजक यथार्थ अछि। लेखक गामक स्थितिक वर्णन करैत लिखैत छथि, 'गामक झंझट कहियो खत्म नहि होइत अछि। हेबो नहि करत। आइ कियो जमीन धकिया लेलक तऽ काल्हि कयो खढ़ काटि लेलक परसू कियो धानि घेरि लेलक।'[9]

कोसी, बाढ़ि आ विस्थापन : 'परलय'[10] संग्रहक प्रमुख सामाजिक कथासभमे सँ एक अछि। बाढ़िक भय, जीवन-रक्षाक चिन्ता, घर-परिवार आ माल-जाल बचेबाक प्रयास तथा संसाधनहीन मनुष्यक असहायता एहि कथाक मूल सामाजिक यथार्थ अछि।

कोसीक बाढ़ि सम्पन्न आ निर्धन लोकसभपर समान प्रभाव नहि छोड़ैत अछि। गरीब आ श्रमजीवी वर्ग लेल प्राकृतिक आपदा जीवनक सम्पूर्ण आधारकेँ नष्ट कऽ सकैत अछि। घर, अन्न, पशु, भूमि आ जीविकाक साधन सभ संकटमे पड़ि जाइत अछि। एहिलेल कथाकारक कोसीकेँ प्राकृतिक सत्ता नहि, अपितु सामाजिक विषमताकेँ तीव्र करऽवाला ताकति सेहो कहने छथि।

संग्रहक आलोचनात्मक सन्दर्भमे सेहो कोसी नदीक कहर आ ग्रामीण जीवनक अनुभवक उल्लेख भेटैत अछि। एहि आधारपर कहल जा सकैत अछि जे कोसी एहि कथा-संग्रहक सामाजिक भूगोलक एकटा निर्णायक तत्त्व अछि।

स्त्रीक स्थिति आ सामाजिक असुरक्षा : संग्रहमे स्त्री-जीवन विविध रूपमे उपस्थित अछि। 'किनियाँ-पुतरा'[11] मे बालिका-जीवनक भविष्य आ ओकर सामाजिक असुरक्षाक प्रश्न अत्यन्त मार्मिक ढंगसँ सोझा अबैत अछि। कथाकारक मनमे निष्कलुष बालिकाक भविष्यक प्रति आशंका उत्पन्न होइत अछि; ई आशंका समाजमे स्त्रीक प्रति हिंसक आ शोषणकारी दृष्टिक संकेत दैत अछि।

'असुरक्षित'[12] मे सार्वजनिक जीवनक भय आ सामान्य नागरिकक असुरक्षित अनुभव सोझा अबैत अछि। एहि प्रकारक कथा आधुनिक समाजक ओहि विडम्बनाक उद्घाटन करैत अछि, जतय सार्वजनिक स्थान सभ सेहो भयमुक्त नहि रहि जाइत अछि।

स्त्रीक प्रश्न मात्र नारी-विमर्शक सैद्धान्तिक रूपमे नहि, अपितु दैनन्दिन जीवनक अनुभवक रूपमे सोझा अबैत अछि। घरेलू उपेक्षा, सुरक्षा, सम्मान आ सामाजिक दृष्टि ई सभ प्रश्न संग्रहक सामाजिक संरचनामे अन्तर्निहित छथि।

बेरोजगारी, व्यवस्था आ नागरिक जीवन : 'दाना'[13] आ 'दृष्टि'[14] सन कथासभ आधुनिक शिक्षित युवकक आर्थिक संघर्ष आ रोजगारक प्रश्नकेँ सोझा आनैत छथि। शिक्षाक बादो उपयुक्त अवसरक अभाव युवकक जीवनमे निराशा उत्पन्न करैत अछि। एहि समाजमे शिक्षा स्वतः आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित नहि करैत अछि।

'आतंक'[15] प्रशासनिक भ्रष्टाचार आ नागरिकक असहायताक प्रश्न दिस संकेत करैत अछि। आधुनिक व्यवस्था नागरिकक सुविधा लेल निर्मित होइत अछि, मुदा भ्रष्ट व्यवहार आ प्रभावशाली सम्बन्धक कारण सामान्य व्यक्तिक लेल ई व्यवस्था स्वयं समस्या बनि सकैत अछि।

एहि प्रकारेँ सुभाष चन्द्र यादवक कथा-संसारमे सामाजिक यथार्थक क्षेत्र बड्डु व्यापक अछि। ग्रामीण संकटक संग आधुनिक प्रशासनिक संकट सेहो अछि; पारिवारिक विघटनक संग आर्थिक असुरक्षा सेहो अछि।

भाषा, लोकजीवन आ सामाजिक पहचान : सुभाष चन्द्र यादवक समाज-चित्रणक महत्त्वपूर्ण आधार हुनकर भाषा अछि। आलोचनात्मक भूमिका अनुसार कथाकार परम्पराक नीक पक्षसँ जुड़ैत छथि, मुदा पाखण्डक विरोध करैत छथि। भाषा-विन्यास आ शब्दावलीक दृष्टिसँ सेहो हुनकर कथा-लेखनकेँ विशिष्ट मानल गेल अछि।

लोकजीवनसँ जुड़ल शब्दावली कथा-समाजकेँ स्वाभाविक बनबैत अछि। पात्रक भाषा ओकर सामाजिक पहिचान, भूगोल आ जीवनानुभवकेँ व्यक्त करैत अछि। एहि कारण कथाकारक भाषा शिल्पगत विशेषता नहि रहि सामाजिक यथार्थक प्रमाण सेहो बनैत अछि।

लेखकक अपन दृष्टिमे कथा सामाजिक-ऐतिहासिक दशासँ निर्देशित होइत अछि आ बदलैत समाजक अनुभवक पुनर्निर्माण आवश्यक अछि। एहि विचारक आलोकमे 'बनैत बिगड़ैत'क भाषा आ कथ्य दुनू सामाजिक परिवर्तनक चेतनासँ सम्बद्ध देखाइत अछि।

निष्कर्ष : सुभाष चन्द्र यादवक 'बनैत बिगड़ैत'मे चित्रित समाज बहुस्तरीय, संघर्षशील आ परिवर्तनशील अछि। एहि संग्रहक समाजमे ग्रामीण जीवन अछि, मुदा तकरा रोमानी दृष्टिसँ नहि देखल गेल अछि। एतय गामक सौन्दर्यक संग आर्थिक अभाव, प्रवास, कटाव, बाढ़ि, जातिगत संरचना आ सामाजिक तनाव सेहो अछि।

परिवारक भीतर व्यक्तिक अलग-अलग दुःख अछि; प्रवास परिवारकेँ भौगोलिक आ भावनात्मक रूपसँ प्रभावित करैत अछि; सामाजिक स्थिति आत्मसम्मानक प्रश्नकेँ जटिल बनबैत अछि; स्त्री आ बालिकाक सुरक्षा गम्भीर सामाजिक चिन्ताक विषय बनैत अछि; बेरोजगारी आ भ्रष्ट व्यवस्था सामान्य नागरिकक जीवनक संघर्ष बढ़बैत अछि।

एहि कथा-संग्रहक सबसँ महत्त्वपूर्ण विशेषता ई अछि जे कथाकार समाजक केन्द्रमे सामान्य मनुष्यकेँ राखैत छथि। हुनकर पात्र कोनो असाधारण नायक नहि छथि। ओ अपन जीवनक सामान्य मुदा जटिल परिस्थितिसभमे संघर्ष करैत छथि। एहि संघर्षमे व्यक्तिगत पीड़ा सामाजिक अर्थ ग्रहण करैत अछि।

एहिलेल 'बनैत बिगड़ैत'मे चित्रित समाज निरन्तर बनैत आ बिगड़ैत सामाजिक संरचनाक प्रतीकात्मक संसार अछि। परम्परा आ परिवर्तन, गाम आ परदेस, प्रकृति आ समाज, परिवार आ व्यक्तित्व, असमानता आ मानवीय गरिमा ई सभ द्वन्द्वक बीच सुभाष चन्द्र यादव अपन समयक मिथिलाक एकटा विश्वसनीय सामाजिक आख्यान रचैत छथि।

संदर्भ सूची :

1. प्रसाद, मेघन, मैथिली कथा कोश, पूनम प्रकाशन, सिंघिंया घाट, समस्तीपुर, 1996, पृ0 सं0 – 265
2. ठाकुर, गजेन्द्र (संपादक) विदेह ई पत्रिका, 15 जुलाई 2009
3. झा, किशोर नाथ (संपादक) प्रवासी पत्रिका, इलाहाबाद, दिसंबर 1995
4. ठाकुर, गजेन्द्र (संपादक) विदेह ई पत्रिका, 1 अक्टूबर 2008
5. यादव, सुभाष चंद्र, बनैत बिगड़ैत, 2009, श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 सं0 – 83
6. ठाकुर, गजेन्द्र (संपादक) विदेह ई पत्रिका, 1 दिसंबर 2008
7. यादव, सुभाष चंद्र, बनैत बिगड़ैत, 2009, श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 सं0 – 18
8. ठाकुर, गजेन्द्र (संपादक) विदेह ई पत्रिका, 15 जुलाई 2009
9. यादव, सुभाष चंद्र, बनैत बिगड़ैत, 2009, श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 सं0 – 97
10. ठाकुर, गजेन्द्र (संपादक) विदेह ई पत्रिका, 1 जून 2009
11. ठाकुर, गजेन्द्र (संपादक) विदेह ई पत्रिका, 15 जुलाई 2008
12. ठाकुर, गजेन्द्र (संपादक) विदेह ई पत्रिका, 1 नवंबर 2008
13. झा, राजमोहन (संपादक), आरंभ, नवंबर 1982
14. ठाकुर, गजेन्द्र (संपादक) विदेह ई पत्रिका, 1 मई 2009
15. ठाकुर, गजेन्द्र (संपादक) विदेह ई पत्रिका, 15 नवंबर 2008